वार्तालाप सी.डी. नं. 871, भिलाई–1 (छत्तिसगढ़) ता.6.11.09

Disc.CD No.871, dated 6.11.09 at Bhilai-1 (Chattisgarh)

समय–3.50–7.00

जिज्ञासुः बाबा जब पूर्णमासी होती है तो समुद्र में जो टायड्स होती हैं बहुत ऊँची ऊँची उछाल मारती है। और उसीके साथ–साथ जो थोड़े मानसिक असंतुलन जिनका होता है वो भी ज्यादा उनमें देखा जाता है। तो ऐसा क्यों होता है? वो भी मानसिक संतुलन थोड़ा और ज्यादा उनका.....

बाबाः जिनका मानसिक असंतुलन होता है वो पर्फेक्ट आत्मा है या इम्पर्फेक्ट आत्मा है? (जिज्ञासु–वो तो इम्पर्फेक्ट है।) तो दुनियां में भी जितने भी विधर्मी आत्माएं हैं, जब ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा की आत्मा सम्पूर्ण बनेगी तो दुनियां में होलडाल आने लगेगा। भयंकर विनाश शुरू होगा और उनकी बुद्धि चलायमान हो जाएगी। उनको तो रास्ता ही नहीं मिलेगा। और जो स्थितप्रज्ञ होंगे वो तो जानते हैं कि ऐसा अब होना है। अभी राजधानी स्थापन हो चुकी, स्थिर हो गई अब तो दुनियां का विनाश होना ही होना है। जो डिफेक्टेड आत्माएं हैं माना झूठी हैं, सच्ची आत्माएं नहीं हैं, विनाशी हैं; ऐसे आत्मा का विनाश कभी नहीं होता लेकिन कम जन्म और ज्यादा जन्म तो होते हैं। तो जिनके पूरे 84 जन्म होते हैं वो कहेंगे सम्पूर्ण आत्मा और जिनके पूरे 84 जन्म नहीं होते हैं उनको कहते हैं खण्डित आत्मा। जो ड्रामा का 5000 वर्ष का चक्र है उसका पूरा अनुभव एक्सपीरियन्स उनके अन्दर नहीं है। तो कहेगें खण्डित आत्मा। तो जो अधूरी आत्माएं हैं; क्योंकि अधूरा ज्ञान की रोशनी लेने वाली हैं, सम्पूर्ण ज्ञानी तू आत्मा नहीं बनतीं हैं, तो जब चन्द्रमा सम्पूर्ण होता है तो वो डिफेक्टेड बुद्धि सारे बिखर के सामने आ जाते हैं दुनियां के सामने। अभी भी ये विधर्मी अपने को ऊँचा साबित करते हैं कि हम ऊँचे हैं, हम सभ्य हैं। फिर इनकी जो सच्चाई है वो सारी दुनियां के सामने खुल जावेगी जब चन्द्रमा सम्पूर्ण होगा। उसे कहते है पूरणमासी का चन्द्रमा।

Time: 3.50-7.00

Student: Baba, on a full-moon day tides in the sea rise very high. This time coincides with the increased activity of those with a mental imbalance. So, why does it happen like this? That mental imbalance…

Baba: Are the people with a mental imbalance perfect souls or imperfect souls? (Student: they are indeed imperfect.) So, all the *vidharmi* souls in the world too; when the soul of the Moon of knowledge Brahma becomes complete, the world will begin to shake. A terrible destruction will begin and their intellect will become inconstant (*chalaaymaan*). They will not find any path at all. And those who will be stable (*sthitpragya*) know that it is bound to happen like this now. Now the capital is established; it has become stable; now the world is bound to be destroyed. The defected souls, meaning those who are false , who are not true souls, who are perishable; as such, souls are never destroyed, but they do take fewer or more births. So, those who take the complete 84 births will be called complete souls and those who do not take the complete 84 births are called defective souls (*khandit aatma*). They do not have the complete experience of the cycle of the drama of 5000 years. Hence, they will be called defective souls. So, the incomplete souls; because they take the incomplete light of knowledge, they do not become completely knowledgeable souls; so, when the Moon becomes complete, all those with a defected intellect scatter and are revealed in front of the entire world. Now the *vidharmis* prove themselves greater; [they say:] "We are great, we are civilized". Then their truth will be revealed before the entire world when the Moon becomes complete. That is called the full moon.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समय 7.06
जिज्ञासुः बाबा चन्द्रमा में दाग क्यों दिखाया जाता है?
बाबाः चन्द्रमा में दाग नहीं है। चन्द्रमा; जब आज से 2500 साल पहले विनाश हुआ था, आधा विनाश हुआ था सृष्टि का, तो प्रशांत महासागर का बड़ा हिस्सा टूट करके अलग हुआ। प्रशांत महासागर बड़ा गहरा गड्ढा है ना। उसमें अगाध जल भरा हुआ है। प्रशांत महासागर दुनियां के जितने भी सागर हैं उन सब सागरों में सबसे बड़ा सागर है। तो गड्ढा भी बहुत बड़ा हो गया होगा। तो जब वो हिस्सा टूट कर अलग हुआ, तो उसका सारा जल जितना भी था, गहरे–गहरे गड्ढों में पृथ्वी में भरा हुआ था, वो सारा जल खींच करके कहाँ आ जावेगा? पृथ्वी खींचती है ना। पृथ्वी तो बहुत भारी है। तो सारा जल खींच करके पृथ्वी पर आ गया। क्या? जल सारा पृथ्वी पर आ गया और जो चन्द्रमा का हिस्सा वो मिट्टी का हिस्सा गड्ढों वाला गहरे–गहरे गड्ढे वो अलग हो गया। तो वो गड्ढे हैं। क्या? जो दाग के रूप में दिखाई दे रहे हैं। वो गड्ढे तो स्थूल हैं और चन्द्रमा भी स्थूल है। लेकिन चैतन्य चन्द्रमा कौन है? कौन है?

जिज्ञासुः ब्रह्मा बाबा।
Time: 7.06
Student: Baba, why is the Moon shown to be stained?
Baba: The Moon does not have not stains. The Moon; when the destruction took place 2500 years ago, when the semi-destruction of the world had taken place, a big portion of the Pacific Ocean broke away. The Pacific Ocean is a big deep pit, isn't it? It is full of immeasurable water. The Pacific Ocean is the biggest ocean among all the oceans of the world. So, the pit must also have become very big. So, when that portion broke away, its entire water, which was filled in deep pits in the earth; where will the entire water be pulled towards? The Earth pulls, doesn't it? The Earth is very heavy. So, the entire water was pulled to the Earth. What? The entire water came to the earth and the portion of the Moon, the portion of the soil having deep pits, separated. So, they are pits. What? That which are visible in the form of stains. Those pits as well as the Moon are inert. But who is the living Moon? Who is it?
Student: Brahma Baba.

बाबाः ब्रह्मा बाबा। वाह रे बिटिया। ब्रह्मा बाबा में उनके जो पुरूषार्थ में ज्ञान न समझ पाने के कारण बड़े गहरे गहरे गड्ढे हैं। वो दाग के रूप में दिखाई पड़ते हैं। क्या? दाग लग गया। इसलिए ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा की संसार में पूजा नहीं होती। मंदिर नहीं बनते, मूर्तियां नहीं बनती। क्योंकि गहरे–गहरे दाग लगे हुए हैं। सबसे बड़ा दाग कौन सा है? सबसे बड़ा दाग है एहसानफरामोशी का। कोई कहेगा, क्या बोलते हैं। चन्द्रमा को रोशनी किससे मिलती है? सूर्य से। और सूर्य जिससे रोशनी मिलती है उसको चन्द्रमा ना कर देः मेरी रोशनी है। मैं हूँ गीता का भगवान। मैं हूँ ज्ञान सूर्य। तो ये एहसानमन्द होना हुआ या एहसानफरामोशी हुई? (सभी–एहसानफरामोशी।) और फिर उस एहसानफरामोशी की याद भगवान खुद मुरलियों में दिलाता भी हैः बच्चे तुम जो ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय नाम रखा हुआ है, ये रांग है। इससे पहले प्रजापिता शब्द एड करो। क्या? ये ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय नहीं है। बड़ी अम्मा कुमारी के बच्चे नहीं होते हैं। बच्चे बाप के होते हैं? बीजारोपण करने वाला बाप होता है या अम्मा खुद पैदा कर लेती है? बाप होता है। ये खराब बात है। कोई बच्चे अपने माँ का नाम बताएं और बाप का नाम बताएं ही नहीं, गुम कर दें। या कहें हमें मालूम ही नहीं। तो दुनियां में ये बात अच्छी नहीं मानी जाती। इसलिए ब्रह्माकुमारी विद्यालय से पहले प्रजापिता शब्द ज़रूर एड करो। क्यों? क्योंकि ब्रह्मा नाम तो बहुतों के होते हैं। फर्स्ट

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

क्लास ब्रह्मा, सेकेण्ड क्लास ब्रह्मा ,थर्ड क्लास ब्रह्मा, फोर्थ क्लास ब्रह्मा, फोर्थ क्लास से भी उपर वाला ब्रह्मा। ब्रह्मा नाम बहुतों के हैं। लेकिन प्रजापिता ब्रह्मा एक ही होता है। वो प्रजापिता का नाम इसमें डालना ज़रूरी है। नहीं तो ईश्वरीय विद्यालय नाम लिखना बेकार हो गया। क्योंकि ईश्वर प्रजापिता के द्वारा ही प्रत्यक्ष होता है।

Baba: Brahma Baba. Wah, daughter☺! There are very big deep pits in Brahma Baba, in his *purusharth* because of not being able to understand the knowledge. They appear like stains. What? It was stained; this is why the Moon of knowledge Brahma is not worshipped in the world. Temples are not built; idols are not prepared for him because there are deep stains on him. Which is the biggest stain? The biggest stain is of ungratefulness (*ehsaanfaraamoshi*). Someone may say, "What are you speaking?" From whom does the Moon get light? From the Sun. And if the Moon does not accept the importance of the Sun [saying], "It is my light. I am the God of the Gita. I am the Sun of knowledge", then, is it being grateful or ungrateful? (Students: ungrateful.) And God Himself reminds him of his ungratefulness in the *murlis*: "Children, the name Brahmakumari Ishwariya Vishwa Vidyalaya that you have coined is wrong. The word Prajapita should be added before it". What? This is not Brahmakumari Ishwariya Vishwavidyalaya. The elder mother kumari does not have any children. Do the children belong to the father, does the father sow the seed or does the mother give birth to them on her own? It is the Father. This is a bad thing if children tell the name of their mother and do not tell the name of the father at all or make him vanish or if they say that they do not know at all. So, this is not considered good in the world. This is why the word 'Prajapita' should certainly be added before Brahmakumari Vidyalay. Why? It is because many people have the name Brahma. First class Brahma, second class Brahma, third class Brahma, fourth class Brahma, the Brahma above even the fourth class Brahma. Many people have the name Brahma. But there is only one Prajapita Brahma. It is necessary to add the name of that Prajapita to it. Otherwise, there is of no use writing the name Godly University because God is revealed only through Prajapita.

ईश्वर मुकर्रर रथ के द्वारा प्रत्यक्ष होता है। प्रजापिता ही मुकर्रर रथ है। ब्रह्मा तो टेम्पररी है। क्या? दो रथ की बात मुरली में बताई ना। टेम्पररी रथ और मुकर्रर। मुकर्रर रथ आदि से अन्त तक रहेगा और टेम्पररी? कभी होगा कभी नहीं होगा, अन्त तक तो रहेगा नहीं। तो ब्रह्मा का रथ, दादा लेखराज का भी रथ एकदम आदि में नहीं था। था? नहीं था। अगर एकदम आदि में होता ईश्वर का रथ; क्योंकि भगवान बाप जिसमें भी प्रवेश करते हैं उसका नाम ब्रह्मा रखते हैं। तो अगर सिंध हैदराबाद में जब उनको साक्षात्कार हुए उसी समय प्रवेश किया, सन् 36 में, तो उनको इधर–उधर भटकने की दरकार नहीं थी क्योंकि भगवान तो सब कुछ जानता है। उसे किसी से पूछने की दरकार नहीं है। वो तो ज्ञान का बीज बोने वाला पिता है। अहम बीज प्रदःपिता। उसका बाप कोई भी होता नहीं। प्रजापिता का बाप हो सकता है, ब्रह्मा का बाप हो सकता है लेकिन गॉड फादर बाप कोई नहीं होता।

God is revealed through the permanent chariot. Prajapita himself is the permanent chariot. Brahma is temporary (chariot). What? The subject of two chariots has been mentioned in the murlis, hasn't it? Temporary chariot and permanent (chariot). The permanent chariot will remain from the beginning till the end and the temporary (chariot)? It will be present sometimes and sometimes not. It will certainly not remain till the end. So, Brahma's chariot, Dada Lekhraj's chariot was not present in the very beginning. Was it present? It wasn't. Had it been present in the very beginning, the chariot of God; because whoever God the Father enters is named Brahma. So, if He entered (Brahma) in Sindh Hyderabad itself, when he had visions, in the year 36 then, there would not have been any need for him to wander here and

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

there because God knows everything. He does not need to ask anyone. He is the father who sows the seed of knowledge. *Aham beej pradahpita*[1]. He does not have any father. Prajapita can have a father, Brahma can have a father but God the Father does not have any father.

तो ऐसे नहीं है कि सिंध हैदराबाद में ब्रह्मा बाबा में सबसे पहले गॉड फादर ने प्रवेश कर लिया। नहीं। उनको साक्षात्कार हुए। साक्षात्कार होने का मतलब ये नहीं है कि भगवान ने प्रवेश कर लिया। साक्षात्कार होना अलग बात और प्रवेश होना अलग बात। साक्षात्कार तो बहुत से भक्तों को भक्तिमार्ग होते रहे। तो क्या भगवान घड़ी–घड़ी प्रवेश करता रहा उनमें? नहीं। भगवान तो आता ही तब है, जब नर्क की दुनिया खलास होनी है और नई दुनिया तैयार होनी है। तो दादा लेखराज ब्रह्मा में भी परमत्मा शिव ने नहीं प्रवेश किया था जब उनको साक्षात्कार हुए। उनमें तो प्रवेश बहुत बाद में हुआ है।

So, it is not that God the Father entered Brahma Baba first of all in Sindh Hyderabad. No. He had visions. Having visions does not mean that God entered him. Having visions is a different thing and the entrance (of God the Father) is a different thing. Many devotees had visions in the path of *bhakti* (devotion). So, did God keep entering them every moment? No. God comes only when the world of hell is about to perish and the new world is about to be ready. So, the Supreme Soul Shiva did not enter Dada Lekhraj Brahma when he had visions either. He entered him much later.

उनका नाम जो ब्रह्मा पड़ा है, वो बाद का नाम ब्रह्मा है। क्या? उनसे भी पहले तीन और ब्रह्मा हो चुके हैं। क्या? तीन और भी ब्रह्मा हो चुके हैं। कौन–कौन? वो अपने गुरू से पूछा साक्षात्कारों का रहस्य, तो नहीं बताए सके। अपने जन्म के और भी जो गुरू 12 थे उनसे भी पूछा, उन्होंने भी नहीं बताया। वाराणसी में जाकरके विद्वान आचार्यों से पूछा, उनसे भी उनको कोई समाधान नहीं मिला। तब उनकी बुद्धि ठनकी कि हमारे जीवन के अनुभव के आधार पर हमारा जो भागीदार है दुकान का, वो जितना होशियार है लौकिक और अलौकिक और पारलौकिक बातों में उतना हमने किसी को होशियार नहीं पाया। जिसको उन्होंने सारी दुकान सौंपी हुई थी, 10 साल से उनकी दुकान में नौकर था; क्या? 10 साल से उनकी दुकान में नौकर था। बाद में मैनेजर बना दिया। फिर भी नौकर ही रहा ना? कोई मालिक का, दुकान का नौकर हो, कारखाने का मैनेजर हो तो नौकर नहीं है तो क्या है? नौकर ही था ना। उसकी बुद्धि की तीक्षणता और उसकी सच्चाई बाबा की बुद्धि में बैठी हुई थी। होशियारी बुद्धि में बैठी हुई थी। बाबा उतने रत्नों के पारखी नहीं थे जितना वो रत्नों का पारखी था।

The name Brahma that he received is a name that he received later on. What? There have been three other Brahmas even before him. What? There have been three other Brahmas as well. Who all are they? When he asked his guru about the secrets the visions, he could not tell him. He also asked the 12 gurus of his lifetime; even they could not tell him. He went to Varanasi and asked the scholars and teachers; he did not get any solution even from them. Then it came to his intellect, "On the basis of my experience in life I haven't found anyone as intelligent as the partner of my shop in *lokik, alokik* and *paarlokik* matters". He had entrusted the entire shop to him. He was serving at his shop since 10 years. What? He was serving at his shop since 10 years. Later on he was made the manager. Still he remained a servant, didn't he? If someone is the servant of a master, of a shop or is the manager of a factory; then, if not a servant what is he? He was just a servant, wasn't he? The sharpness of his

[1] I am the father (*pita*) who sows the seed (of knowledge).

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

intellect and his truthfulness had sat in the intellect of Baba; his intelligence had sat in his (Baba's) intellect. Baba was not as discerning about gems as he was.

बाबा वहीं कलकत्ते में अपनी गद्दी में चले गए दुकान पर। और वहाँ से उनको समाधान उस व्यक्ति से मिल गया। शिव ने प्रवेश किया। शिव ने प्रवेश करके बताया। सृश्टि की जब शुरूवात भगवान आकरके करता है तो अकेले करता है या प्रवृत्ति चाहिए? प्रवृत्ति चाहिए। तो दो आत्माएं थीं जिनमें साथ–ही–साथ प्रवेश किया। एक यज्ञ माता और दूसरा यज्ञ पिता। जो माता थी उसमें सुनने–सुनाने का फाउन्डेशन डालने के लिए परमात्मा शिव ने प्रवेश किया। और उस माता ने ब्रह्मा बाबा से साक्षात्कार जो सुने थे वो प्रजापिता को सुनाए। प्रजापिता ने जब सुने तो उसमें भी तो शिव ने प्रवेश किया। एक में प्रवेश किया या दो में? दो में प्रवेश किया क्योंकि भगवान आते हैं तो प्रवृत्ति मार्ग का फाउन्डेशन डालते हैं। एक में भक्ति का फाउन्डेशन और दूसरे में ज्ञान का फाउन्डेशन। ज्ञान का बीजारोपण करने के लिए जिस पिता में, पुरूष तन में प्रवेश किया वो ही प्रजापिता हुआ। उस प्रजापिता के द्वारा उस माता को उनके साक्षात्कारों का सारा रहस्य खोल दिया। माता ने सुना। भले पहले माता ने सुनाया। सुनाया.....

Baba went there, to his shop at Calcutta. And there he got the solution from that person. Shiva entered him. Shiva entered and told him (the secrets of the vision). When God comes and starts the world, does He do it alone or does He require *pravritti*[2]? He requires *pravritti*. So, there were two souls in whom He entered simultaneously. One was the *yagya mata* (mother of the *yagya*) and the other was the *yagya pita* (father of the *yagya*). The Supreme Soul Shiva entered the mother to lay the foundation of listening and narrating. And that mother narrated the vision to Prajapita which she heard from Brahma Baba. When Prajapita heard it, Shiva entered him as well. Did He enter one or two [people]? He entered two [people] because when God comes, He lays the foundation of the path of household. Through one He laid the foundation of *bhakti* and through the other He laid the foundation of knowledge. The father, the male body in which He entered in order to lay the foundation of knowledge is Prajapita. Through that Prajapita, He revealed the entire secret of the visions to that mother. The mother heard it. Although initially, the mother narrated. She narrated.....

तो पहला ब्रह्मा कौन हुआ? ब्राह्मण बने बिगर प्रजापिता था क्या? मुरली में ये बोला है। प्रजापिता कब कहें? कब साबित हो? जब पहला ब्राह्मण साबित हो। पहला ब्राह्मण सो पहला देवता, सो पहला क्षत्रिय, सो पहला वैष्य, पहला शूद्र। तो पहला ब्राह्मण वो तब ही बना जबकि उसने किसी ब्रह्मा के मुख से सुना, पैदा हुआ। ब्रह्मा के मुख से ही ब्राह्मण पैदा होता है। भले वो कोई भी कैटगरी का ब्राह्मण हो। लेकिन सच्चा ब्राह्मण जो भी होगा वो ब्राह्मण तब कहा जाएगा जबकि वो ब्रह्मा के मुख से सुने। तो ब्रह्मा के मुख से सुना साक्षात्कारों को और शिव ने प्रवेश करेके; सुनने के साथ–2 कोई समझ सकता है कि नहीं? समझ सकता है। सुनता भी गया और समझता भी गया और फिर मुख से समझा दिया। समझने में वहाँ दो प्रकार की बच्चियाँ थीं। एक बच्ची ने सिर्फ सुना और सुन करके फटाफट ब्रह्मा बाबा को कान में फूँक दिया। कोई–2 ऐसे होते हैं ना जो कुछ सुनते हैं और बड़ी जल्दी आती है दूसरों को सुनाएं। फटाक से दूसरों को सुनाने लग पड़ते हैं। माना सुनने और सुनाने में बड़े तीखे होते हैं।

[2] Household.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

So, who is the first Brahma? Was he Prajapita without becoming a Brahmin? – This has been said in the murli. When will he be called Prajapita? When will he prove to be (Prajapita)? It is when he is proved to be the first Brahmin. The one who is the first Brahmin is the first deity, the first *kshatriya*[3] the first *vaishya*[4] [and] the first *shudra*[5]. So, he became the first Brahmin only when he heard [the knowledge] from the mouth of a Brahma, when he was born [through the mouth of a Brahma]. A Brahmin is born only from the mouth of Brahma. He may be a Brahmin of any category. But whoever is a true Brahmin will be called a Brahmin only when he listens [to the knowledge] through the mouth of Brahma. So, he heard the visions through the mouth of Brahma and Shiva entered…… Can any one understand simultaneously while listening or not? He can understand. He went on listening as well as understanding and then he explained through his mouth. There were two kinds of daughters who understood. One daughter just heard it and she whispered it into the ears of Brahma Baba as soon as she heard it. There are some people like this, aren't they, whatever they listen; they cannot stop themselves from narrating it to others. They start narrating it to others immediately. It means that they are very sharp in listening and narrating.

तो एक माता ने तो जिसने सुनाया उसने सुना और ब्रह्मा बाबा के कान में फूँक दिया। अब ब्रह्मा बाबा भी तो कुछ अनुभवी है कि नहीं है? अपनी जिंदगी के ब्रह्मा बाबा कुछ अनुभवी थे या नहीं थे? बिल्कुल अनुभवी नहीं थे? चलो इतनी अकल ज्ञान समझने की नहीं थी। लेकिन लौकिक जिंदगी जीने की तो अकल थी। अगर इतनी अकल नहीं होती तो इतने बड़े व्यापारी कैसे बन जाते? प्रजापिता न बन जाता? माना लौकिक दुनिया के हिसाब से प्रजापिता फेल हो गया। वो तो गरीब था। उसकी भी हीरों की दुकान थी लेकिन वो चलती ही नहीं थी। तो व्यापार में सिद्धहस्त दुनिया के हिसाब से होशियार कहा जाएगा या बुद्धु? दुनियां के हिसाब से बुद्धु। और ब्रह्मा बाबा दुनिया के हिसाब से? बहुत होशियार। तो कहां ब्रह्मा बाबा भी पीठ पर अनाज लाद करके आठ आने मन बेचते थे। क्या? मुरली में ये बात आई है। दो रूपया मन बेचते थे। जैसे किसी के पास कोई साईकिल भी न हो। पीठ पर लाद–2 करके गली में–'ले अनाज'। ऐसे छोटा सा व्यापारी और कितना बड़ा व्यापारी हो गया? इतना बड़ा हीरों का व्यापारी हो गया कि आज भारतवर्ष के बड़े–2 शहरों में जो हीरों की और सोने, चांदी की दुकानें रखी हुई हैं उनपर उन्होंने लिख रखा हैः दादा लखीराज की पुरानी दुकान। सबने लिख दिया। तो देखो कितनी प्रसिद्धि हो गई।

So, one mother who narrated (the visions) heard (the explanation) and whispered it into the ears of Brahma Baba. Well, is Brahma Baba also an experienced person or not? Was Brahma Baba experienced to some extent in his life or not? Was he not at all experienced? OK, he did not have much intelligence to understand the knowledge. But he did have the intelligence to lead a *lokik* life. Had he not been intelligent to this extent, how could he become such a great businessman? Would Prajapita not have become (a big businessman)? It means that Prajapita failed from the point of view of the *lokik* world. He was poor. He too had a diamond shop but it didn't flourish at all. So, will he be called the one who is adept at business from the worldly point of view, will he be called intelligent or will he be called a fool? He was a fool from the worldly point of view. And what was Brahma Baba from the point of view of the world? He was very intelligent. So, there was a time when even Brahma Baba used to carry foodgrains on his back and sell it for eight *annas*[6] per kilo (*man*). What? It has been mentioned in the

[3] A member of the warrior class.
[4] A member of the merchant class.
[5] Untouchable; a member of the fourth and the lowest division of the Indo-Aryan society.
[6] Fraction of a rupee.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

murlis. He used to sell it for (a price of) two rupees per *man*. Just as someone who does not have even a cycle. He used to carry foodgrains on his back and [sell them] in lanes [shouting:] "Foodgrains for sale". He was such a small businessman and how big businessman did he become? He became such a big businessman of diamonds that it has been written on the diamond, gold and silver shops of big cities of India: "Dada Lakhiraj's old shop". Everyone wrote it. So, look, he became so famous.

तो ब्रह्मा बाबा भी होशियार तो थे ना दुनियां के हिसाब से। तो जो इतना होशियार आदमी हो वो व्यक्ति को परखेगा या नहीं परखेगा? परखता ज़रूर है क्योंकि 12 गुरू किए थे और 12 गुरू ..... पहले न परखे तो गुरू बना लिए और परखे.....। तो गुरू बनाने की तो उनकी आदत थी। क्या? गुरू बनाने की उनकी आदत थी, प्रभावित होना उनका स्वभाव था। जो भी आया नई बात बताई सुनाई, सत्य वचन महाराज। फौरन गुरू बना लिया, खुश हो गए, प्रसन्न हो गए। तो ऐसे ही उस माता, जिस माता ने पहले सुना ना, उसी माता ने ब्रह्मा बाबा को सारा सुना दिया। तो लाजमी है ब्रह्मा बाबा तो बहुत खुश हो गए। उससे खुश हो गए तो खुश होंगे तो गुरू बनायेंगे। ब्राह्मणों की दुनियां का गुरू हो गया ना। माता गुरू बिगर उद्धार हो सकता है? नहीं हो सकता। तो ब्राह्मण जीवन में उनका उद्धार तो होना ही था। जितना जो कुछ भी होना था वो हुआ जिस कोटि को उन्हें पहुँचना था वो शिव की तीन मूर्तियों में नीची मूर्ति की कोटि पर पहुँचने थे सो पहुँच गए। उन्होंने बात मानी लेकिन समझी नहीं। क्योंकि ब्रह्मा बाबा तो सुनने वाले थे या समझने वाले थे? (सभी–सुनने वाले थे।) और वो माता भी सुनने सुनाने वाली थी या समझने और समझाने वाली थी? सुनने सुनाने वाली थी। तो ब्रह्मा के अंदर भी फाउन्डेशन पड़ गया उस समय। सन् 36 से लेकरके और सन् 46 तक ये फाउन्डेशन रहा। और ब्रह्मा बाबा उस माता को ही सर्वेसर्वा मानते रहे यज्ञ का। क्या?

So, Brahma Baba was also intelligent from the worldly point of view, wasn't he? So, will such an intelligent person judge about another person or not? He definitely judges because he had 12 gurus. And as regards the 12 gurus, he made them his gurus because he had not judged them earlier. And when he judged them.... So, he had a habit of making gurus. What? He had a habit of making gurus. It was his nature to be influenced [by others]. Whoever came and narrated a new thing, he accepted them as truth. He used to immediately make them his guru; he used to become happy, joyful. So, similarly, that mother, who heard (the explanation of visions) first, narrated the entire thing to Brahma Baba. So, it is obvious that Brahma Baba became very happy. He was pleased with her; so if he is pleased, he will make her his guru. She became the guru of the world of Brahmins, did she not? Can there be salvation without the mother guru? It cannot be. So, his salvation in the Brahmin life was bound to happen. Whatever was to happen, happened. The level where he was supposed to reach; he reached the level of the lowest personality among the three personalities of Shiva which he had to reach. He accepted her versions, but did not understand them because was Brahma Baba the one who listens or the one who understands? (Students: He was the one who listens.) And was that mother the one who listens and narrates or was she the one who understands and explains? She was the one who listens and narrates. So, the foundation was laid in Brahma as well at that time. This foundation remained intact from the year 36 to the year 46. And Brahma Baba continued to consider that mother to be of the *yagya*. What?

लेकिन एक दूसरी माता और भी थी उस माता ने सुना भी और सुनकरके दूसरों को नहीं सुनाया। अंदर–2 समझने की कोशिश की। और जब समझा तो ब्रह्मा बाबा को बताया। ब्रह्मा की बुद्धि में उस समय बैठ गया कि मैं ही कृष्ण की आत्मा हूँ। तो ये 'मैं ही कृष्ण की आत्मा

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

हूँ' ये बात बुद्धि में जिसने बैठाई यहाँ संगमयुग में वो आत्मा वहाँ जन्म देने के निमित्त बनेगी। तो यज्ञ के आदि में वो व्यक्तित्व जिसके द्वारा ब्रह्मा बाबा ने सारा समझा। वो उनकी बुद्धि में नहीं बैठा। क्यों? कोई कारण होगा। क्यों नहीं उसका एहसान माना?

But there was another mother as well. That mother also heard [the explanation of visions] but did not narrate it to others after listening. She tried to understand it in her mind. And when she understood it, she narrated it to Brahma Baba. It sat in Brahma's intellect at that time, "I myself am the soul of Krishna". So, the one who made this topic 'I myself am the soul of Krishna' sit in his intellect here, in the Confluence Age, that very soul will become an instrument in giving birth to him there (in the Golden Age). So, [the importance of] that personality, through whom Brahma Baba understood everything in the beginning of the *yagya,* did not sit in his intellect. Why? There must be some reason. Why wasn't he grateful to him?

जिज्ञासुः उनकी बुद्धि में शुरू से बैठा ही नहीं बाप का.....।
बाबाः हाँ, जिंदगी में उन्होंने देखा ना ये तो नीचे तबक्के का आदमी है। छोटा आदमी है। हमारी दुकान का तो नौकर रहा। मैं सतसंग करने के लिए चल पड़ा तो इसको दुकान सौंप दी होशियार समझकरके। तो नौकर की वृत्ति रही इसीलिए उसको निग्लेक्ट कर दिया।
जिज्ञासुः लेकिन फिर पूछने क्यों गया? नौकर की वृत्ति थी दिमाग में तो फिर पूछने क्यों गया उनसे ब्रह्मा बाबा?
बाबाः ये तो जान लिया...। दुकान क्यों सौंप दी इतनी बड़ी? कोई हिसाब किताब नहीं लिया। दुकान क्यों सौंप दी? कारण क्या? कोई तो आधार होगा जिसके आधार पर लाखों करोड़ों की दुकान सौंप दी। क्या बात थी?
जिज्ञासुः ये परखा कि ये होशियार है।
बाबाः हाँ, ये अंदर से समझते थे। दुनियां के हिसाब से तो फेल हो गया। ये भी समझते थे। क्यों फेल हो गया? क्योंकि ये झूठों की दुनियाँ है। झूठ की दुनियां में झूठा चलता है। ब्रह्मा बाबा बड़े–2 राजाओं महाराजाओं के रणिवास में घुस जाते थे। वो सुरमा पहनके। सिंधी तो खूब सुरमा पहनते हैं। तो ये होशियारी थी ना उनकी। वो भागीदार तो बेचारा ये सब ठट्ठा कर्म नहीं जानता था। न करना चाहता था वो सच्चा था। तो आज की दुनियां में सच्चा जो व्यक्ति होगा वो कभी भी करोड़पति धंधे से नहीं बनेगा। बिना चालाकी किए।

Student: It did not sit in his intellect at all from the beginning that the Father....
Baba: Yes, he (Brahma baba) saw this in his life, didn't he, "This person belongs to the lower section. He is a lowly person; he has been a servant in my shop. When I went for the *satsang* (spiritual gathering) I handed over the shop to him considering him to be intelligent". So, he had a feeling that he is his servant. This is why he neglected him.
Student: But then why did he go to ask him (about the visions)? When he had the feeling that he is his servant in his mind, then why did Brahma Baba go and ask him?
Baba: He did realize....Why did he hand over such a big shop [to him]? He did not seek any account. Why did he hand over the shop [to him]? What was the reason? There must be a reason on the basis of which he handed over the shop worth *lakhs* (hundred thousand) and *crores* (millions) [of rupees]. What was that thing?
Student: He discerned that he was intelligent.
Baba: Yes, He realized this from within. He (the partner) failed from the worldly point of view. He also understood this. Why did he fail? It is because this is a world of liars. A liar

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

succeeds in a world of falsehood. Brahma Baba used to apply surma[7] and enter into the *ranivaas* (queen's palace) of kings and emperors The Sindhis apply a lot of surma. So, this was his cleverness, wasn't it? That partner, the poor fellow did not know all these cunning ways. Nor did he want to do it. He was truthful. So, in today's world a true person can never become a millionaire through business, without shrewdness.

तो ब्रह्मा बाबा इस बात को अंदर से समझते थे ये सच्चा आदमी है। क्या? इसीलिए उसको दुकान बिना हिसाब किताब किए सौंप दी। लेकिन ये भावना नहीं बैठी कि भगवान ही मेरे साक्षात्कारों का अर्थ बताए सकता है। इसमें भगवान प्रवेश था। ये उन गुरूओं के मुकाबले बड़ा गुरू है जिन्होंने मेरी बातों का अर्थ नहीं बताया। वो ही माता को गुरू बना लिया। यज्ञ में उस समय माता का बहुत मान था। माता में और प्रजापिता में यज्ञ के आदि में भी झगड़ा हो गया। दो ग्रुप हो गए। एक ओम मंडली, एक एंटी ओम मंडली। आदि में भी धोबीघाट चलता था। मुरली में बोला आदी से ही ये धोबीघाट चलता चला आया है और अंत तक चलता रहेगा। जब तक कपड़े साफ नहीं हुए हैं, शरीर रूपी वस्त्र जब तक नहीं साफ हुए हैं, आत्मा जब तक साफ नहीं हुई है तब तक ये चलता रहेगा। तो आदि में भी धोबीघाट चलता था। और धोबीघाट का कोई धोबी होगा कि नहीं होगा? कोई वाशरमैन भी था। वो वाशरमैन.....। धोबी और धोबीनियों में लड़ाई हो गई। धोबीनीयाँ हो गई ब्रह्मा बाबा की तरफ और धोबी अलग हो गया। जिन्होंने पहचाना उस धोबी को वो धोबी के साथ गए और जिन्होंने नहीं पहचाना वो धोबी का विरोध करने लग पड़े। वो ब्रह्मा के फालोवर्स्, ब्रह्माकुमार कुमारी आज भी उस धोबी को नहीं पहचान रहे। तो विरोध कर रहे हैं। उनके विरोध करने का प्वाईन्ट सबसे बड़ा कौनसा है मालूम है? किस बात पर विरोध कर रहे हैं? वो एक ही बात और कुछ नहीं है उनके पास। एक ही ग्लानी सुनायेंगे, अरे वो तो व्यभिचारी है, भ्रष्टाचारी है, अनाचारी है, बलात्कारी है, ये है, वो है। वो ऐसा है। ज्ञान सारा अच्छा है। अरे ये कोई बात हुई? सारा ज्ञान अच्छा होगा मुरलियों के अनुकूल होगा तो भगवान का ही ज्ञान होगा कि दूसरे का ज्ञान होगा?
जिज्ञासुः भगवान का।

So Brahma Baba realized this from within, this person is truthful. What? This is why he handed over the shop to him without seeking accounts. But he did not realize that God alone can explain the meanings of my visions. God had entered him. This person is a greater guru than those gurus, who did not tell me the meaning of my questions. He made that very mother his guru. At that time the mother was given a lot of respect in the *yagya*. A dispute had arisen between the mother and Prajapita in the beginning of the *yagya*. Two groups were formed. One was Om Mandali and the other was Anti-Om Mandali. The laundry (*dhobighat*) was functioning in the beginning too. It has been said in the murli that this *dhobighat* has been functioning from the beginning itself. And it will till the end. Until the clothes are cleaned, until the cloth like bodies are cleaned, until the soul is cleaned, this (laundry) will continue. So, the laundry was functioning even in the beginning of the *yagya*. And will there be a washerman in the laundry or not? There was a washerman as well. That washerman.... A fight took place between the washerman and the washerwomen. The washerwomen sided with Brahma Baba and the washerman went on the other side. Those who recognized that washerman went along with him and those who did not recognize started opposing the washerman. So, those followers of Brahma, the Brahmakumar-kumaris are not recognizing that washerman till date. So, they are opposing him. Do you know the main point because of which they are opposing? That is just one thing, they have nothing else. They will narrate

[7] Collyrium.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

only one defamation: "*Arey*, he is adulterated, he is unrighteous, he is immoral, rapist, he is this, and he is that. He is like this. [Otherwise] the entire knowledge is good. *Arey*, is this possible? If the entire knowledge is good, if it is in accordance with the murlis, then will it be God's knowledge or the knowledge of anyone else?
Student: It will be knowledge of God.

बाबाः तो जो आदि में लड़ाई थी वो ही लड़ाई अभी भी है। ब्रह्मा बाबा उस समय भी इस रहस्य को नहीं जान सके और मरते दम तक भी उनकी बुद्धि में ये बात नहीं आई कि बच्चों को कहें कि तुम अपने नाम के आगे बी.के. मत लिखो। ब्रह्माकुमार मत लिखो। क्या लिखो? प्रजापिता ब्रह्माकुमार। इसका मतलब ब्रह्मा की बुद्धि में अंत तक भी बैठा ही नहीं। तो एहसानफरामोश कहें कि नहीं कहें?.... प्रश्न क्या था? किसने किया? जवाब मिला कि नहीं? दूसरा जिज्ञासुः चंद्रमा में दाग क्यों?
बाबाः हाँ, उस बच्ची ने प्रश्न किया था। वो तो भाग गई। चंद्रमा में दाग क्यों हैं? दाग नहीं हैं वो वास्तव में गड्ढे हैं। जिन गड्ढों में गिरके के उसका.....। कोई गिर जाए तो पता भी न चले कहाँ चला गया। उनकी गहराइयों का कोई पता नहीं लगा सकता। इतने गहरे–2 गड्ढे हैं। इसीलिए भक्तिमार्ग में एक कहावत आती है– चौथ का चंद्रमा। क्या? चौथ का चंद्रमा। चंद्रमा ने चौथ खाई है। क्या? बाबा भी कहते हैं कि ये जो मैंने रथ लिया है ना ये लोन लिया है। क्या? जो लोन लिया है उसका मैं किराया भरता हूँ। मुफत का नहीं लिया है। बीच में ये चौथ खाता है। क्या? समझता कुछ भी नहीं है। ईश्वर की वाणी को समझा कुछ भी नहीं। बिना समझे ही चौथ ले ली। क्या चौथ ले ली? कि हमें ये पद देना पड़ेगा। क्या पद देना पड़ेगा? कि मैं नई दुनियां में जाके प्रिन्स बनूंगा। जब समझा ही नहीं, तो पुरूषार्थ भी ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार नहीं हुआ।
जिज्ञासुः समझ में उनको कब आएगा?
बाबाः अभी भी तो समझ रहा है। अभी कृष्ण की आत्मा समझ नहीं रही है? नहीं समझ रही है? कृष्ण की आत्मा अभी पढ़ाई नहीं पढ़ रही है? जैसे और बच्चे पढ़ाई पढ़ रहे हैं वो भी पढ़ाई पढ़ रही है। उसी के लिए तो सारी पढ़ाई हो रही है।

Baba: So, whatever dispute existed in the beginning [of the *yagya*] prevails even now. Brahma Baba could not understand this secret even at that time and it did not come in his intellect until his death that he should tell the children, do not write BK before your name. Do not write Brahmakumar. What should you write? Prajapita Brahmakumar. It means that it did not sit in the intellect of Brahma till the very end. So, should he be called ungrateful (*ehsaanfaraamosh*) or not? ….. What was the question? Who asked it? Did he receive the answer or not?
Student: Why are there stains on the Moon?
Baba: Yes, that daughter had asked the question. She has run away. Why are there stains on the Moon? They are not stains; actually, they are pits. By falling into those pits.... If someone falls [in those pits] he will not even know where he went. Nobody can ascertain those depths. They are such deep pits. This is why in the path of *bhakti* there is a saying, *'chauth ka chandrama*[8]*'*. What? *Chauth ka chandrama*. The Moon has taken commission. What? Baba also says, "I have taken this chariot on loan. What? I pay rent for the thing that I have taken on loan I have taken. I have not taken it free of cost. This one gets commission in between. What? He does not understand anything; he did not understand God's *vani* at all. He took the commission without understanding. What commission did he take? That I will have to be given this post. Which post will I have to be given? That I will go and become a prince in the

[8] The Moon on the fourth night of a fortnight; supposed to bring reproach or disgrace on the one who looks at it.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

new world. When he did not understand at all, then he did not make *purusharth* according to the godly knowledge either.
Student: When will he understand?
Baba: He understands now too. Doesn't the soul of Krishna understand now? Does he not understand? *Arey*, is the soul of Krishna not studying the knowledge now? Just as other children are studying the knowledge, he is also studying it. The entire knowledge is for him alone.

समयः 44.54–46.00
जिज्ञासुः बाबा, आज मुरली में बोला कि 84 जन्म लेते–2 इतने पतित हो गए हैं कि इन्द्रियों से ज्यादा सुख भी नहीं भोग सकते। इसका क्या अर्थ है बाबा? कैसे ज्यादा सुख नहीं भोग सकते इन्द्रियों से ?
बाबाः ये शरीर वृक्ष है और आत्मा बीज है। जब बीज बार–2 बोया जाता है तो कमजोर होता जाता है कि नहीं? ऐसे ही ये आत्मा बार–2 जन्म लेती है तो कलाएँ कम होंगी या नहीं होंगी? कलाएँ कम होती जाती हैं, शक्ति क्षीण होती जाती है। आत्मा की रोशनी खतम। अरे वो ही देवताओं के मूर्तियाँ देखो कितने सुंदर चेहरे और कितनी सुंदर आँख दिखाई जाती है। वो आँखों की रोशनी हमारी कहाँ (चली गई)?। हमारी आँखें अंदर क्यों घुसी चली जा रही हैं? चेहरा सूख के चुपुट्टी क्यों होता जा रहा है?

Time: 44.54 – 46.00
Student: Baba, it was said today in the murli that while taking 84 births we have become so sinful that we cannot even enjoy more pleasures through the bodily organs. What is meant by this Baba? How can't we enjoy more pleasures through the bodily organs?
Baba: This body is a tree and the soul is a seed. When the seed is sown again and again, does it go on becoming weak or not? Similarly, when this soul is born again and again, will the celestial degrees decrease or not? The celestial degrees go on decreasing, the power goes on decreasing. The light of the soul vanishes. Arey, look at the idols of the deities, their faces and their eyes are shown so beautiful. Where did that luster [go] from our eyes? Why are our eyes sinking inside? Why is the face shrinking?

समयः 52.57–55.50
जिज्ञासुः आत्मिक स्थिति में टिकते हुए जब कर्मातीत स्टेज आ जाएगी ना तो फरिश्ता सो देवता बन जायेंगे ना।
बाबाः आत्मिक स्थिति में टिकते–2 परमात्मा स्थिति बनाए लोगे?
दूसरा जिज्ञासुः फरिश्ताई स्थिति।
बाबाः फरिश्ताई स्थिति? वो आत्मिक स्थिति कैसी होती है जिसमें फरिश्ता बन जाते हैं?
जिज्ञासुः देह भी भूलना है। आत्मिक स्थिति में टिके रहेंगे कर्मातीत स्थिति लायेंगे तो फरिश्ता स्टेज होगी ना हमारी?
बाबाः वो आत्मिक स्थिति कैसी होती जिसमें फरिश्ता अनुभव होता है? आत्मा को ये अनुभव होता है कि हम फर्श की दुनियां वालों से रिश्ता कोई भी रखने वाले नहीं हैं। फर्श की दुनियां वालों से हमारा कोई रिश्ता नहीं है। जो फर्श की दुनियां से परे अर्श की दुनियां में सदैव रहने वाला है उसी से हमारा सारा रिश्ता है। हम उसी का धंधा करते हैं दूसरा कोई धंधा नहीं करते हैं – ये अनुभव हो तो फरिश्ता। और वो फरिश्ताई अनुभव तब ही होगा जब नश्टोमोहा बनें। किससे–2 नश्टोमोहा बनें? अपनी देह से नश्टोमोहा बनें। क्या पहचान है देह से नश्टोमोहा होने की ? अरे देह से नश्टोमोहा होने की कोई पहचान है या नहीं है? कोई पहचान नहीं? देह से नश्टोमोहा होने की क्या पहचान है?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Time: 52.57-55.50
Student: When we achieve the *karmaateet* stage[9] while becoming constant in the soul conscious stage we will be transformed from angels to deities, will we not?
Baba: While becoming constant in the soul conscious stage will you achieve the stage equal to the Supreme Soul?
Another Student: The angelic (*farishtaai*) stage.
Baba: The angelic stage? What kind of a soul conscious stage is it in which you become an angel?
Student: We have to forget even the body. If we become constant in soul conscious stage, if we achieve the *karmaateet* stage, our stage will become angelic, will it not?
Baba: What kind of a soul conscious stage is it in which you feel like an angel? The soul feels that it does not have any relationship (*rishta*) with the people of the world of *farsh* (floor or land). We do not have any relationship with the people of the world of *farsh*. All our relationships are only with the one who lives beyond this world of *farsh* in the world of *arsh* (the world above). We do only his business. We do not do any other business. You must experience this - then you are an angel. And that angelic stage will be experienced only when you become *nashtomoha* (conqueror of attachment). You must become *nashtomoha* from what? We should become *nashtomoha* from our body. What is the indication of being *nashtomoha* from the body? Arey, is there any indication of being *nashtomoha* from the body or not? Is there no indication? What is the indication of being *nashtomoha* from the body?

किसीने कुछ कहा।
बाबाः हाँ। कोई पदार्थ नहीं चाहिए। क्या? जो पदार्थों से मोह लगा हुआ है ना। ये चाहिए, वो चाहिए, कपड़ा चाहिए, मकान चाहिए। ये सब चाहिए–2 खतम। जो मिला सो ठीक। अहो प्रभु! तेरी बड़ी कृपा है। ब्राह्मणों के खजाने में कोई चीज़ की कमी महसूस न हो।
किसीने कुछ कहा।
बाबाः हाँ, अपने देह से भी कोई लगाव नहीं। बीमारी आ गई ठीक है आ गई। हिसाब किताब पूरा हो रहा है। तो भी पुरूषार्थ तो करना ही है। कि कोई बीमारी आ जाए तो पुरूषार्थ खतम? तो भी पुरूषार्थ करना है।

Someone said something.
Baba: Yes. "No material is required". What? The attachment that we have for materials, haven't we: "We want this, we want that, we want clothes, we want a house". All these wants should end. "Whatever I get is OK. O God! You are very merciful". You should feel nothing lacking in the treasury of Brahmins.
Someone said something.
Baba: Yes. There should not be any attachment for the body either. "If we fall sick; ok, let it be so". The karmic account is being cleared. Even then we have to make *purusharth* or should the *purusharth* end if we fall sick? Even then we have to make *purusharth*.

समयः 56.00–01.00.27
जिज्ञासुः जो सूर्य पर नौ ग्रह चक्कर लगा रहे हैं ना बाबा। वो क्लॉकवाईस चक्कर लगाते हैं हमेशा। इसका बेहद में क्या अर्थ है?
बाबाः उल्टा चक्कर क्यों नहीं लगाते? हाँ, मतलब क्लॉकवाईस का ये है कि राईट से लेफ्ट की ओर नहीं जायेंगे। क्या? लेफ्ट से राईट की ओर ही चलेगा। जो भी चक्कर है वो ये

[9] Stage beyond the effect of actions.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

लेफ्ट ये राईट। आपको सामने से कुछ और दिखता हो तो वो समझ लो। तो लेफ्ट से राईट की ओर ही चक्कर लगना वो है चक्कर लगाना। सारी यादगारें कहाँ की हैं? संगमयुग में। संगमयुग में जब आत्माओं को ज्ञान हो जाता है कि मैं आत्मा हूँ और मेरा बाप परमपिता परमात्मा है तो हर आत्मा राईटियस की ओर ही बढ़ेगी या उल्टे रास्ते की ओर बढ़ना चाहेगी? भले पूर्व जन्मों के संस्कार उसको उल्टा चला देते हैं, माया उसको उल्टा घुमा देती है। वो बात अलग। लेकिन दिल की इच्छा क्या है? राईटियस ही चलना है। सब राईटियस ही चलेंगे।

Time: 56.00-01.00.27
Student: Baba, the nine planets that revolve around the Sun always revolve in a clockwise direction. What does it mean in an unlimited sense?
Baba: Why don't they revolve anticlockwise? Yes, clockwise means that they will not go from right to left. What? They will move only from left to right. Whatever is the revolution; this is left and this is right (Baba showed with gestures). If you see something else from the front, understand that. So, to revolve only from left to right, is revolution. All the memorials are of which time? Of the Confluence Age. In the Confluence Age, when the souls become aware, "I am a soul and my Father is the Supreme Father Supreme Soul', then, will every soul proceed towards righteousness or will it wish to proceed in the opposite direction? Although the *sanskars* of the previous births may make it follow the opposite path; maya makes it turn opposite. That is a different thing. But what is the desire of the heart? We have to follow only the righteous [path]. Everyone will follow only the righteous [path].

इस समय की यादगार है। कि इस समय जो भी पुरूषार्थियों में उत्तम पुरूषार्थी हैं, जिसको सब फॉलो करते हैं; बड़े को सब फॉलो करते हैं कि छोटों को? बड़ों को। तो जो 8 हैं, 9 हैं और 10 हैं या 11 भी होंगे; क्या? जो 11 हैं (वो) एक मुखिया का चक्कर लगाते हैं। 12–12 के 9 ग्रुप हैं ना। तो वो एक मुखिया का चक्कर लगाते हैं। ऐसे ही अभी तक जितने भी ग्रह–उपग्रह संसार में मनुष्यों को प्रत्यक्ष हुए वो कितने थे? 9 थे। अभी? अभी नए–2 भी निकल पड़े ना। जो पहले पता ही नहीं थे। तो ऐसे ही अब ये सारी सृष्टि में जो भी ग्रह हों या उपग्रह के रूप में पार्ट बजाने वाली आत्माएँ हों जो भगवान को पहचान लेती हैं, अपने आत्मा के स्वरूप को पहचान लेती हैं वो उल्टा नहीं चलना चाहती हैं। भले पूर्व जन्मों के संस्कारों के अनुसार संस्कार बड़े प्रबल होते हैं। वो संस्कार उल्टा चला देते हैं लेकिन वो उल्टा चलना नहीं चाहते। तो सीधा ही चल रही हैं सब।एक हिसाब से सब आगे ही बढ़ रहे हैं। भले देखने में आते हैं कि हाँ टूट गए। टूट गए तो भी ऐसे ही है जैसे कि पहाड़ पर कोई चढ़ता है। बड़े तेज तूफान आ जाता है तो कोई शेल्टर ले लेता है थोड़े समय के लिए। ऐसे ही वो शेल्टर ले रहे हैं। तूफान कम होगा, बुद्धि थोड़ी शांत होगी फिर आगे बढ़ाएगा। तो ये सीधा ही चक्कर लगाना है संगमयुग में। हर आत्मा उल्टा चक्कर कोई भी नहीं चलाना चाहती हैं। सब जानते हैं कि हम ईश्वरीय श्रीमत में बरखिलाफ चलेंगे तो हमें दुख ही मिलेगा। सीधा चलेंगे तो सुख मिलेगा। सुख कौन नहीं चाहता है? ऐसी कोई आत्मा है दुनियाँ में जो सुख की इच्छुक न हो, दुख ही दुख चाहती हो? कोई भी नहीं। सब चाहते हैं कि सुख शांति मिले। दुख अशांति तो कोई भी नहीं पसंद करता। दुख अशांति ये है उल्टा चक्कर। सुख शांति ये है सीधा चक्कर।

It is a memorial of the present time that all those who are the best *purusharthis* among all the *purusharthis*, whom everyone follows; does everyone follow the elder one or the younger ones? The elders. So, the 8, the 9, and 10 or they could also be 11; what? The eleven [souls] revolve around one chief. There are 9 groups of 12 each, aren't they? So, they revolve around one chief. Similarly, what is the number of all the planets and satellites which have been

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

revealed to the human beings in the world? They were nine. Now? Now new ones, which were not known earlier, have also emerged, haven't they? So, similarly, now all the souls which play a part in the form of planets or satellites in the entire world, which recognize God, recognize the form of their soul do not wish to proceed in the opposite [direction]. Although the *sanskars* are very strong as per the *sanskars* of the past births. Those *sanskars* make them act in an opposite way, but they do not wish to act an opposite way. So, everyone is treading straight. In a way everyone is proceeding ahead. Although it appears, "Yes, they have broken away [from knowledge]. Even if they have broken away [from knowledge], it is the same thing. Just like someone climbs a mountain and faces a very strong storm, then some take shelter for a while. Similarly, they are taking shelter. When the storm eases, when the intellect becomes a little calm, they will move ahead again. So, we have to revolve only in the right direction in the Confluence Age. No soul wants to revolve in an opposite direction. Everyone knows, we will get only sorrow if I act against the the godly *shrimat*. If we walk straight (in accordance with shrimat) then we will get happiness. And who doesn't want happiness? Is there any soul in the world which does not desire happiness and desires only sorrow? Nobody. Everyone wishes to get happiness and peace. Nobody likes sorrow and restlessness. Sorrow and restlessness is the opposite revolution in the opposite direction. Happiness and peace is the revolution in the right direction.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info